कृतज्ञता श्रमण

इस शोध कार्य को करने का मूल प्रेरणाही शोधार्थ को अपनी आदरण्याया गुरु डा० (श्रीमती) सरन भट्टाचार्य (एम० ए० भाषा विज्ञान, हिंदी, पंजीकृत (डा०) मैड्रम से मिली। इस शोध प्रकार के प्रारंभ से अन्त तक मार्ग में आने वाली प्रत्येक समस्याओं, बाधाओं के निवारण हेतु आपने अपना बहुपुष्प समय एवं सन्तोष साधन योगदान किया। सामग्री संकलन के समय बहुत से ऐसे पल आये जब शोधार्थ लगभग पूरी तरह से निराश हो चुके थे ऐसे परिस्थितियों में एक ही ऐसा हाल था जिससे शोधार्थ के दूर युग हुए कम्यों को सहारा दिया और उसके हाथों में आशा दीप प्रज्वलित कर प्रदान किया। शोधार्थ को अपनी गुरु माता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है आपकी सहजता और उदारता सहजगता पूर्वक दिया गया निर्देशन, शोधार्थ के शोध कार्य एवं जीवन के लिए बहुपुष्प निधि है।

प्रस्तुत विषय के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय डा० कमता कमलेश जी, (अध्यक्ष हिंदी विभाग, अम्रोहा) से मिली। आपने बड़ी आलोचितापूर्वक शोधार्थ से अन्तर्जय होते हुए भी एक सपना अपने पर पर रखा, अपनी निजी
पुस्तकालय से सामग्री संकलन का सुअवसर प्रदान किया शोधार्थों आपके प्रति धन्यवाद प्रस्तुत करती हूँ।

मानस संगम के समाधक आदरणीय श्री बल्डी नारायण तिवारी के प्रति आभार प्रस्तुत हूँ। अत्यंत व्यस्तता के बाद भी आप ने विदेशों में हिन्दी के प्रसंग में अनेक महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की, जिससे शोधार्थों को अपने शोध को सत्यता के निकट ले जाने में सहायता मिली। हाँ, शिवशंकर यिवेदी, (अत्यंत हिन्दी विभाग, अमृपौर डिग्री कलेज, कानपुर) श्रीपती गायत्री सिंह (रिडर अमृपौर डिग्री कलेज, कानपुर) ने समय समय पर अत्यंत महत्वपूर्ण सम्मान सूचक प्रदान किये शोधार्थों आपका आभार प्रकट करती हूँ।

हाँ विधा बिनु सिंह जी, सचिव, 30 प्रौ हिन्दी संस्थान, लखनऊ ने अपना बहुमुख समय देकर विश्व हिन्दी समितियों के अपने समर्थ सुनाया। शोधार्थों आपके सहयोगपूर्ण व्यवहार के प्रति आभारी हूँ।

श्री राकेश अनन्द एवं श्री प्रेम नाथ बाजपेयी जी (प्रकाश, प्रैणिक जगारण, लखनऊ, कानपुर) के प्रति शोधार्थों आभार प्रकट करती हूँ आपने एक अच्छे मित्र के समन्वय शोधार्थों को सामग्री संकलन में समय समय पर सहयोग प्रदान किया।
शाहा उषा सहस्रा (भूतपूर्व रिहर, रांची सुप्रेर्क कालेज)

तथा शाहा पुष्पा सहस्रा (वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, स्टॉल अधीरिटी आक इण्डिया लिट, रांची) के प्रति सोहार्य अपना आभार प्रकट करती है अपने समय समय

पर रांची में अध्ययन अवधि को अपने महत्वपूर्ण सुधार हो एवं विचार विवासों द्वारा

और उपयोगी बनाया। शाहा पुष्पा सहस्रा दीवी ने अपने चतुर्व विश्व हिन्दी

सम्मेलन के अनेक खट्टे मिटे समर्ध देकर शोहार्य के मौलिक विस्तार में महत्वपूर्ण

कहिया जोड़ी।

शोहार्य के अपनी बहन शाहा (श्रीमती प्रति बाला सहाय) तथा

बहनों के बी मनमोहन सहाय के प्रति आभार प्रकट करती है अपे दोनों ने असीम

लेन एवं ममता को भाग्य प्रदान की आपके विश्व सहयोग के विना यह शोह विकसित करना नितांत असम्भव कर्य बा। अप वैसे विश्व लेनों पाना शोहार्य

के लिए विश्वास हो शोहार्य का विषय है।

कृतज्ञता श्रद्धांजलि करते समय एक व्यक्तित्व 'ऐसा भी है जो

शोहार्य को सबसे अधिक सहयोग प्रदान करता रहा वह व्यक्तित्व है श्री अनिल

कुमार सिन्भा जी का। अपे श्टील अधीरिटी आक इण्डिया लिट, रांची में एक
अल्प समानजनीय पद पर आशीर्वाद है, आप शिष्ट, शालीन एवं विनम्र व्यविधत्व
के स्वामी है। अपने गोपाल को अपने व्यविधत्व के सद में से सदा प्रभावित
किया है। इसके द्वारा हो कई तुलन के कृतियों एवं महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए
जिससे यह शोषण सहजता रहेगा पूर्ण हो सके। अपने लिए आघार प्रकट करना
एक अल्प दुःख कार्य है क्योंकि उनके व्यविधत्व में इस तरह के अवसरों के
लिए कोई स्थान या महत्व नहीं है अतः शोषण ऐसे शासक व्यविधत्व के प्रति आशीर्वाद
कृष्ण है।

आचार्य नरेन्द्र देव महापूर्वा महिला महाविद्यालय कानपुर
के पुस्तकालय के सभी कार्यकर्ताओं विरोध कर नूतनों के प्रति शोषण अपना
अधूरा प्रकट करते है। इसके अतिरिक्त राजकौशल पुस्तकालय, माइक्रोडी पुस्तकालय,
कानपुर विश्व विद्यालय पुस्तकालय, बाल भवन पुस्तकालय के कार्यकर्ताओं के
प्रति भी शोषण अपना आघार प्रकट करते है।

फादर कामिल बुल्के शोषण संग्रह रायची के पुस्तकालय अध्यक्ष,
तथा उन सभी कार्यकर्ताओं के प्रति अपना आघार प्रकट करते है जिनके सहयोग
से यह प्रस्तुत शोष प्रवर्तन पूर्ण हो सका।
डॉ० दिनेश्वर प्रसाद मिश्र (अवकाश महात्मागंधी , राँची
विश्व विद्यालय - जो आजकल फादर कारमाल बुलखे के हिन्दी अंग्रेज़ी शब्दकोश
पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है) ने अपने बहुपूर्व समय में शोधार्थ को सशक्तकर
दिये आपके स्वस्थ्य विचारो एवं उचित मार्ग दरान के प्रति शोधार्थ कृतज्ञता आपित
करती है।

डॉ० सत्यनारायण शर्मा (प्रवक्ता हिन्दी, जम्मू) ने अपने भारत
गामन के दौरान राँची में अपने निवास स्थान पर सशक्तकर प्रदान करके शोधार्थ
को अस्तम लाभान्वित किया। शोधार्थ आपके प्रति आपकर प्रकट करती है।

इसके अतिरिक्त उन सभी विदेश मंज़र्लयों, राजदूतावासों, सरकारी
एवं गैर सरकारी संस्थाओं को शोधार्थ कृत्यांक देती है जिन्होंने सभी पत्रों का यथोचित,
यथासमय उत्तर प्रदान कर शोधार्थ का मार्ग प्रशास्त किया।

शोधार्थ अपने पिता श्री जगत नारायण श्रीवास्तव जी के प्रति
हृदय से सादृश्य आभार प्रकट करती है जिन्होंने अपनी सीमित आप के साथों
शहर के बाहर शोधार्व की मां श्रीमती माणी श्रीवास्तव सदा हो शोधार्व के साथ रहीं और अपनी ममता की छाँव से दूर दराजों में भी पर जैसी हर संबंधन प्रदान के, शोधार्व अपनी मां के प्रति कभी उद्धृत, नहीं हो सकती वे सदा उसके तपते हुये रेगिस्तान रूपी जीवन में शेतला कुर्स शान्त वृष की चाया है।

शोधार्व अपने समस्त अग्रज एवं अनुजो के प्रति आभारी है।

यह शोध प्रकर्ष पूर्ण करना अत्यन्त दूर कथे एवं दुरस्थ कार्य सिद्ध हुआ फिर भी शोधार्व ने अपनी सेवाओं और समाधान से अधिक परिश्रम करके यह प्रकर्ष पूर्ण किया है, किन्तु कोई भी शोध अपने आप में पूर्ण नहीं होता, सच्चिदानन्द एवं
भाषा निरन्तर विकास के क्रम में बढ़ता रहता है। शोधार्थ के मैत्रिक सिद्धांत एवं तत्त्वों में अवरोध ही कोई बुद्धियाँ रह गयी होगी क्योंकि इतने बड़े विषय वस्तु को इस प्रबन्ध में समानता शोधार्थ का विषय प्रयास है अतः कहीं कहीं विवरण जैसा प्रतीत होने लगा है किन्तु वह भी संभाव्य है उनके बिना प्रबन्ध तथ्यपूर्ण नहीं बन पाता।

अतः विचारण से विनय अनुरोध है कि शोधार्थ द्वारा की गयी बुद्धियों के लिये अपय प्रदान करें।

(ज्योति श्रीवास्तव)